11 आज के दौर में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता

दिनेश
M.A. (History) M.D.U.
Rohtak, Haryana
Net, J.R.F.

सारांश

यह रत्नगर्भा, भारत भूमि अपने अंदर जहाँ असंख्य मणि मुक्ताएँ छिपाऐं बैठी है। वही इसके आंचल में समय–समय पर ऐसे नवरत्न पैदा हुए है जिनकी जीवन ज्योति से जगमगा उठा। जिन्होंने चट्टान बनकर समय का प्रवाह रोक दिया, जो अपने लिए नहीं वरन् अपने देश व विश्व के लिए जिये और जिनके पवित्र तेज के सामने समस्त अमानवीय एवं अपावन विचारों ने घुटने टेक दिए। माँ भारती के अपने पुत्रों में ऐसा एक नाम स्वामी विवेकानन्द का भी है। स्वामी जी का नाम जेहन में आते ही एक ऐसी ऊर्जा का संचरण होता है, जो अक्षय होती है जिसका कभी नाश नहीं होता। उनके शब्द आज भी अनादिक और आनंदित वाणी के रूप में गुंजायमान होते है जिनमें सत्य के साथ साक्षात्कार करने की अनंत ऊर्जा समाहित है। उन्होंने एक बार कहा था कि मैं जो देकर जा रहा हूँ वह एक हजार साल की खुराक है। लेकिन जब हम उनके साहित्य, शैक्षिक विचारों, दर्शन, धर्म के प्रति सोच भी पढ़ते है तो लगता है कि यह खुराक सिर्फ एक हजार साल नहीं अपितु कई युगों की है

जीवन परिचय–

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को कलकत्ते (कोलकाता) के शिमलापल्ली नामक मौहल्ले के निवासी श्री विश्वनाथ दन्त व भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ। बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। बच्चों की प्राथमिक पाठशाला माता की गोद ही होती है और उस पाठशाला में अध्यापक उनकी माता द्वारा ही किया जाता है। माता की उन शिक्षा का प्रभाव बच्चे के मस्तिष्क पर आजीवन रहता है। अतः उनकी माता जी ने उन्हें सुसंस्कारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी बचपन की प्रारंभिक अवस्था में नरेन्द्रनाथ बडे चुलबुले और उत्पाती थे। किंतु साथ ही आध्यात्मिक बातों के प्रति उनका विशेष आकर्षण था। तर्कबुद्धि ऐसी पैनी थी की बचपन में ही लगभग सभी समस्या के लिए अगट्य दलीलों की अपेक्षा किया करते थे। इन सभी गुणों के प्रादुर्भाव एक ओजस्वी नवयुवक के रूप में[2]। उन्होंने कॉलेज स्तर की शिक्षा प्राप्त के साथ–साथ स्वामी जी ने संगीत, वाद्य–यंत्र, अश्वारोहण तथा तैराकी में भी सिद्धहस्तता प्राप्त की। गायन कला के चलते ही नवम्बर, 1881 ने सुरेन्द्रनाथ मित्र के घर पर इनकी भेट स्वामी रामकृष्ण परमहंस से हुई। नरेन्द्रनाथ की गायन कला से प्रभावित होकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें दक्षिणेश्वर आने का निमंत्रण दिया। कालातंर में नरेन्द्रनाथ उनके शिष्य बने। सन् 1888 ई0 में अंत से लेकर 1890 के बीच नरेन्द्रनाथ के दृष्टिकोण में एक जबरदस्त परिवर्तन हुआ। उन्हें यह जागृति हो उठी कि उन्हें जनजीवन यात्रा करते हुए 31 मई 1893 को स्वामीजी अमेरिका के शिकांगों, ''पार्लियामेंट ऑफ रिलीजन'' में भाषण दिया। इस भाषण से दुनिया के तमाम पंथ आज की सब ले सकते है। इस अकेली घटना ने पश्चिमी भारत की एक ऐसी छवि बना दी जिसे आज तक याद किया जाता है। और यूरोप व अमेरिका के लोगों ने ये महसूस कराया कि भारत भले वैज्ञानिक दृष्टि से उनसे पीछे है किंतु आध्यात्मिक, नैतिक, ज्ञान में उनसे हजारों वर्ष आगे है। दिसम्बर 1990 में भारत वापस लौटे। 14 जून 1902 में अल्पआयु में ही इस महान संयासी, शिक्षाशास्त्री, देशभक्त एवं समाज सुधारक ने निर्वाण प्राप्त किया।

शिक्षा एवं दर्शन के प्रति विचार/दृष्टिकोण–

स्वामी जी का जीवन दर्शन निश्चय ही अत्यन्त गौरवपूर्ण व प्रेरणादायक है। स्वामी जी ने शिक्षा के संबंध में कोई सुनियोजित व्याख्या वस्तुत नहीं की और न ही कोई पुस्तक लिखी। उनके दार्शनिक सिद्धांत एवं शिक्षा संबंधित विचार हमें उनके व्याख्यानों में मिलते है जो उन्होंने भारत, अमेरिका एवं विभिन्न यूरोपीय देशों की जनता के सामने रखे थे। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा की शिक्षा का आधार धर्म होना चाहिए और उनका केन्द्र बिंदु ''चरित्र निर्माण'' ही होना चाहिए। धर्म से तात्पर्य मात्र पूजा–पद्वति ही नहीं था अपितु ''जीवन जीने की कला'' था। वे अपने समय की प्रचलित शिक्षा व्यवस्था से प्रसन्न नहीं थे। वे कहते थे कि– 1. इसमें कला का निर्माण हो रहा है। 2. इसमें हममें हीन भावना आती है 3. बच्चे रह–रह कर तोता बन रहे है और उनके मस्तिष्क का विकास नहीं हो रहा है। 4. ये शिक्षा मनुष्य को मशीन बना रही है। स्वामी जी में असीम शक्ति देखते थे और शिक्षा का धर्म इस शक्ति में विकसित कर उन्हें पूर्ण विलास की ओर ले जाना है। स्वामी जी शिक्षा हेतु किसी भी प्रकार के दंड देने के विरूद्ध थे क्योंकि उनका मानना था जैसे प्रताडित करके गधे को घोडा नहीं बनाया जा सकता वैसे ही हम बच्चों को प्रताडित करके अक्षरज्ञान तो दे सकते है किंतु हम उन्हें शिक्षित नहीं बना सकते।[4] स्वामी जी के अनुसार देश की उन्नति में वहां के शिक्षित प्रतिशत की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। स्वामी जी ने हमारे पिछडेपन का पतन का चरण शिक्षा भी माना है। अतः हमें गांवों में शिक्षा स्त्री दीपक का प्रकाश पहुंचाना होगा। यदि विद्यालय में विद्यार्थी नहीं पहुंच पाते है तो विद्यालयों को विद्यार्थियों के पास उनकी मातृभाषा में शिक्षा देनी चाहिए। वे मानते थे कि शिक्षा बच्चे की प्रकृति व जरूरत के हिसाब से हो। शिक्षा ऐसी हो जिससे एकाग्रता बने। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जिसने सर्ववांगिण विकास हो।

युवा शक्ति के प्रति दृष्टिकोण–

स्वामी जी ने आजीवन युवाओं को जाग्रत करने का अथक प्रयास किया। वह जानते थे कि युवा आगे आकर भारत को विश्व के अग्रणी देशों की पंक्ति में लाने के लिए हर संभव प्रयास करें। वे युवाओं में खुद पर विश्वास करने की कहते थे खुद पर विश्वास परमात्मा के ऊपर विश्वास नहीं उन्नति करने का एकमात्र उपाय है। जिसमें आत्मविश्वास नहीं वह नास्तिक है।[5]

वह हमेशा यही सीख देते है कि भविष्य अपने हाथों में हो तो। अतः हमें याद रखना चाहिए की हमारा प्रत्येक विचार व कर्म हमारे सहायक होते है। वो कहते थे कि तुम लोग भी तो कुछ ऐसा करके दिखाओं जिससे पता लगे की तुम लोग भी असाधारण हो।[6] वह चाहते थे की युवा आगे आकर भारत ये विश्व के अग्रणी देशों की पंक्ति में लाने के लिए हर संभव प्रयत्न करें। उनका मानना था यही किसी देश की युवा शक्ति जाग गई तो उस देश के आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। वे युवाओं के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक बल से सुदृढ करने के पक्ष में थे। वे युवाओं को एक ऐसे अमूल्य संसाधन मानते थे जिसका दोहन जिस राष्ट्र ने अच्छे से किया। वो विकास के पथ पर आगे ही बढता चला गया।

व्यक्तित्व विकास के प्रति दृष्टिकोण–

व्यक्तित्व विकास की शिक्षा पर स्वामी जी का मानना था कि व्यक्ति का व्यक्तित्व असरदार होना चाहिए। व्यक्ति जिसके संपर्क में आये उस पर उसके गुणों की, उसकी बुद्धि की तथा उसके आचरण व प्रभाव जबरदस्त हो। हमारा कर्म हमारे व्यक्तित्व का बाह्य अभिव्यक्ति मात्र ही है। अतः हमारी सम्पूर्ण शिक्षा और सारे अध्ययनों का सम्भव लक्ष्य हमारे व्यक्तित्व में गढते हुए उसे और अनवरत निखारना ही है। वो कहते थे कि जैसे तुम सोचोगे तुम वहीं हो जाओगे। यदि तुम दुर्बल समझोगें तो तुम दुर्बल हो जाओगे और बलवान सोचोगें तो बलवान हो जाओगे। कार्यसूर व शेर में जैसे दिलवाले थे ही लक्ष्मी देवी का अनुग्रह मिलता है।[7] स्वामी जी के अनुसार मनुष्य में पूर्णता को प्राप्त होना ही उसके जीवन उद्देश्य होना चाहिए। समयानुसार व्यक्ति द्वारा उसके अंदर की बुराईयों को कम करने की कोशिश करना ही उसे पूर्णता की ओर अग्रसित करता है।

धार्मिक दृष्टिकोण–

स्वामी विवेकानंद धार्मिक थे। किंतु वे पुरातनपंथी पारंपरिक नहीं थे। बल्कि वे बहुत आधुनिक सोच वाले व्यक्ति थे। उनकी सोच वैज्ञानिकता में लिखे हुए थी। उनकी कल्पना एक ऐसे धर्म की स्थापना करना था जिसमें सभी धर्मो के सारतत्व मौजूद थे। ''मैं भारत में ऐसे धर्म की कल्पना करता हूँ जिसमें हिंदू धर्म की उदारता हो, बौद्ध धर्म की करूणा हो और इस्लाम की बराबरी हो। ''वो हिन्दु थे किंतु हिन्दु धर्म थे। इस पक्ष कि मुझे मत छेडो' की बहुत आलोचना/भार्सना की। उनके अनुसार हिन्दू धर्म अब खेल खान–पान तक ही सीमित रह गया था। वह निर्धनों के धनियों द्वारा शोषण पर धर्म की चुप्पी से बहुत अप्रसन्न थे। उनके अनुसार भूखे व्यक्ति के सामने धर्म की बात करना ईश्वर व मानवता का अपमान है। उन्होंने कहा जब तक लाखों लोग भूख व अज्ञान का जीवन व्यतीत करते है। मैं उस प्रत्येक व्यक्ति से देशद्रोही मानता हूँ जिसने विद्या तथा ज्ञान तो उनके व्यय पर प्राप्त किया है और अब उनकी रत्ती भर भी परवाह नहीं करता। इसलिए ईश्वर की पूजा मानवता की सेवा करता है। इसलिए उन्होंने हिन्दू धर्म भी एक नवीन सामाजिक उद्देश्य प्रदान किया।[8]

आज के युग में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता–

स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रांसगिकता सर्वकालिक है, लेकिन मौजूदा समय में यह और ज्यादा महसूस की जाने लगी है। 19वीं सदी में जब हम अंग्रेजों की गुलामी में चुंगल में थे तब ऐसा लग रहा था कि हमारा आत्मविश्वास ओर हमारी राष्ट्रीय भावना कुछ शिथिल–सी पढने लगी थी, जिसे विवेकानंद ने जगाने का काम किया। आज जिस तरह से कुछ सांप्रदायिक शक्तियां उनका गलत इस्तेमाल कर रही है, विवेकानंद के धार्मिक विचारों में नहीं हिन्दु–मुस्लिम की भावना नहीं व ना ही अलगाव की भावना। उन्होंने हमेशा एक राष्ट्र की बात की। वे जब कहते है ''गेट अप इंडिया एंड कवर्ड द वर्ल्ड बाइ योर स्पिरिप्पुअलिटी'' तो दो समुचे समुदायों का भारत के लिए आहवान करते है। उन्होंने आधुनिक परिपेक्ष में वैज्ञानिक आधार पर सहज शब्दों में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। स्वामी जी के शक्तिशाली प्रोत्साहन वाणी युवकों के मन में जगाने वाली है। आत्मविश्वास एवं जीवन की समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करने वाली उनके हृदय में प्रेम व सेवाभाव उत्पन्न करने वाली व नैतिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाली एवं जीवन के कठिनाईयों और अनिश्चितता के समय

मार्गदर्शन करने वाली है।[9] विवेकानंद जी के विचार थे कि समाज सुधार के लिए प्रथम कर्तव्य लोगों को शिक्षित करना। यह शिक्षा नैतिक व बौद्धिक दोनों प्रकार की होनी चाहिए। आधुनिक युग में यह विचार बहुत हद तक स्टीक बैठता है। आज शिक्षा का जो स्तर है उससे उचित दिशा–दशा विवेकानंद के विचारों से प्रदान की जा सकती है।[10] स्वामी जी के विचार एवं उनके उपदेश और भी प्रासंगिक हो गए है। स्वामी जी ने लोगों की स्मृति सीमा से परे होकर सोचने का तरीका बताया। स्वामी जी के विचारानुसार प्रकृति का द्वार कैसे खटखटाना चाहिए कैस आज्ञात देना चाहिए केवल यह ज्ञान हो गया तो बस प्रकृति अपना सारा रहस्य खोल देती है। उस आज्ञात व तीवृत की शक्ति एकाग्रता से आती है। आधुनिक युग में व्यक्तिगत आकाक्षाएं तो ऊँची हो गई परंतु इनको पूरा करने का न्यायसंगत साधक या तो उपलब्ध नहीं है या उन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता। हम राष्ट्रीयता का जो उपदेश है परन्तु जातिवाद, भाषावाद व संकीर्णता को अपनाऐं हुए है। पक्षपात करते है। स्वामी जी ने इन सबसे अलग होकर न्यायसंगत बनने व समाज के हर व्यक्ति के विकास की बात नही है।[12] उन्होंने हमेशा युवा शक्ति ने राष्ट्र की ताकत माना है। जिसको आज पहचानने की आवश्यकता है। भारत में आज 60 प्रतिशत आबादी युवाओं की है। जिसे विवेकानंद के विचारों से कर्मशाली, नैतिक, चरित्रवान बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष–

अपनी दिव्य दृष्टि के कारण शायद उन्हें भविष्य के विश्व व भारत की स्थिति का अंदाजा हो गया था इसलिए उन्होंने अपने विचारों से न केवल तात्कालिक समाज अपितु भविष्य में समाज की बुराईयों ने भी दूर करने का प्रयत्न किया था। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्पद है क्योंकि अपनी महान सेवा के बल पर दुनिया में भारत की आध्यात्मिक पहचान बनाने में सफल हुए विवेकानंद ने सौ साल पहले यह चमत्कार कर दिखलाए जो आज असंभव है।

भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अशिक्षा, राष्ट्रविरोधी प्रवृति जैसी अनेकों बुराईयों से ग्रस्त समाज थे एक बार फिर स्वामी जी के चिंतन से बस चराने का समय आ गया है। यह न केवल एक संत अपितु एक दिव्य पुरूष थे। जिन्होंने अपने विचारों से तत्कालिक समाज की कुरीतियों से आजाद किया और उसे उन्नत बनाने के अकेले प्रयास किए। उनके प्रयत्नों ने आध्यात्मिक जगत के साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में उनके विचारों ने एक क्रांति उत्पन्न कर दी। जिसकी आज हमारे समाज देश, धर्म, जाति में अति आवश्यकता है।

संदर्भः–

1. अग्रवाल जी के, समाजशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशंन आगरा, पृ0 257
2. स्वामी ब्रम्हस्यानंद विवेकानंद राष्ट्र ने आहान रामकृष्ण मठ नागपुर, पृ0 1
3. वही0 पृ0 5
4. Vivekannand, Collection Works, Vol.-III Mayvati Memorial Edition, Advaita Ashram P. 301
5. निखिलानन्द स्वामी, विवेकानंद एक जीवनी अद्वेत आश्रम प्रकाशन विभाग कोलकाता पृ0 311
6. शर्मा ए0 आर0 के0, स्मृति सीमा से परे होकर सोचने का तरीका, श्री शारदा बुक हाउस, विजयवाडा।
7. वही0 पृ0 29
8. यशपाल, बी.एल. ग्रोवरः आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मुल्याकंन (1707 ई0 से वर्तमान समय तक) पृ0 276–77
9. स्वामी विवेकानन्द व्यक्तित्व का विकास रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन बेलुमरठ, पृ0 3
10. स्वामी विवेकानंद नया भारत गढो रामकृष्णन मठ नागपुर पृ0 24
11. शर्मा ए0आर0 के स्मृति सीमा से परे होकर सोचने का तरीका श्री शारदा बुक हाउस, विजयवाडा, पृ0 8
12. आहुजा राम, सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ0 24–25